Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शहडोल संभाग के समाजार्थिक एवं सांस्कृतिक विकास परिदृश्य का ऐतिहासिक अध्ययन

लेफ्टिनेंट डॉ. राजेश कुमार ठाकुर* शिव कुमार हल्दकार**

*** शोध निर्देशक एवं सहा.प्रा. (इतिहास) स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) भारत**
**** सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शासकीय आदर्श महाविद्यालय, उमरिया (म.प्र.) भारत**

शोध सारांश – शहडोल संभाग की स्थापना 14 जून 2008 को मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी द्वारा की गई। इस संभाग में तीन जिले शहडोल, उमरिया एवं अनूपपुर शामिल हैं। चूंकि शहडोल जिला उमरिया व अनूपपुर जिले के मध्य में अवस्थिति है इस कारण से शहडोल को संभाग का मुख्यालय बनाया गया है। शहडोल, मध्य प्रदेश के उमरिया, अनूपपुर, सीधी, सतना और छत्तीसगढ़ के कोरबा और बिलासपुर जिलों से घिरा हुआ है। शहडोल जिले की समुद्र तट से अधिकतम ऊंचाई 1123 मीटर है। शहडोल जिले में 6 तहसील –ब्यौहारी, जयसिंहनगर, सोहागपुर, गोहपारु, बुढ़ार और जैतपुर हैं। शहडोल जिले को विभाजित कर 1998 में उमरिया और वर्ष 2003 को अनूपपुर जिला बनाया गया। ऐतिहासिक परिदृश्य के रूप में देखा जाये तो मध्य भारत कालीन नगर शहडोल म. प्र. के मध्य पूर्व में स्थित था। पूर्व में यह रीवा राज्य का एक प्रमुख क्षेत्र था; मध्यप्रदेश के प्रमुख जिले के रूप में इस नगर का उद्भव फरवरी 1948 के उपरान्त ही हो सका। यद्यपि यह जिला पिछड़ा हुआ जिला है तथा यहाँ के लगभग 58.32 प्रतिशत निवासी अनुसूचित जाति एवं जनजाति के हैं। प्रकृति ने इस जिले को अपना अपार स्नेह दिया है। तभी तो यह नर्मदा, सोन एवं जोहिला नदी का उद्गम स्थल है। सतपुड़ा, मैकल व अमरकंटक श्रृंखलाओं की ममतामयी गोद का संरक्षण श्रृंखलाओं, कंदराओं, घाटियों एवं सघन आवरण के रूप में सुरक्षा प्रदान करती है। शोधार्थी द्वारा शहडोल संभाग अंतर्गत आने वाले जिले शहडोल, उमरिया, अनूपपुर के ऐतिहासिक, सामाजिक व सांस्कृतिक परिदृश्य का विस्तृत अध्ययन किया गया है। अध्ययन को पृथक–पृथक जिले में वर्गीकृत कर 20वीं शताब्दी में शहडोल संभाग के विकास को स्पष्ट किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट है कि क्षेत्र के सामाजिक व आर्थिक विकास में वहां की जनसंख्या का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यद्यपि मध्यप्रदेश के अन्य संभागों की जनसंख्या की तुलना में सबसे कम जनसंख्या वाला संभाग, शहडोल संभाग है।

शब्द कुंजी – 20वीं शताब्दी में शहडोल संभाग, सामाजिक, सांस्कृतिक परिदृश्य, आर्थिक विकास।

प्रस्तावना – शहडोल संभाग अंतर्गत सम्मिलित जिलों का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है–

(1) शहडोल – शहडोल जिले का गठन मध्यप्रदेश के पुनर्गठन के साथ ही वर्ष 1956 में किया गया है। शहडोल जिले के नाम के सम्बन्ध में इतिहासविदों का मानना है कि इस नगर का नाम शहडोलवा यादव के नाम के कारण पड़ा है। यह जिला उत्तर–पूर्वी दिशा में स्थित है। यह पहाड़ एवं वनों से घिरा हुआ है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्र 6205 वर्ग किलोमीटर है। वर्ष 2011 जनगणना के अनुसार जिले की जनसंख्या 10,66,063 है।

(2) उमरिया – इस जिले की स्थापना 6 जुलाई 1998 को शहडोल जिले से अलग करके की गई। बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान के लिए यह जिला प्रसिद्ध है। जिले में 3 विकासखण्ड, 5 तहसीलें, 610 आबाद ग्राम, 234 ग्राम पंचायतें, 03 जनपद पंचायतें एवं मण्डल पंचायतों की संख्या 12 है। यहाँ 4558 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में कोयले का भण्डार है। संजय गांधी थर्मल पावर प्लाण्ट पाली (मण्ठार) में स्थित है।

(3) अनूपपुर – इस जिले की स्थापना 15 अगस्त 2003 को शहडोल जिले से अलग कर की गई। यह जिला 3701 वर्ग कि.मी. में फैला है, जो पहाड़ियो एवं वनों से घिरा हुआ है। अमरकंटक की पहाड़ियों से नर्मदा नदी व सोन नदी का उदगम हुआ है। इस जिले का मुख्यालय एवं नगर मध्यप्रदेश के उत्तर–पूर्वी दिशा में स्थित है। अनूपपुर रेलवे स्टेशन मध्यप्रदेश का अन्तिम जंक्शन है। इस जिले में 4 तहसील, 4 विकासखण्ड, 4 जनपद पंचायतें एवं आबाद ग्रामों की संख्या 571 है।

शहडोल संभाग की मुख्य कार्यशील एवं सीमांत कार्यशील कामगारों का विवरण प्रस्तुत किया जाना अनिवार्य है, जो कि क्षेत्र के विकास में अपना अमूल्य योगदान प्रदान कर रहे हैं। शोधार्थी द्वारा मध्यप्रदेश के अन्य संभागों की तुलना में शहडोल संभाग में मुख्य कार्यशील एवं सीमांत कार्यशील कामगारों के तुलनात्मक अध्ययन हेतु वर्ष 2001 एवं वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर मध्यप्रदेश के संभागों में कार्यशील एवं सीमांत कामगारों का प्रतिशत निम्न तालिका में प्रस्तुत किया है:–

तालिका – मध्यप्रदेश के संभागों में मुख्य एवं सीमांत कामगारों की स्थिति

(संख्या प्रतिशत में)

राज्य एवं संभाग	कुल कामगारों में से मुख्य कार्यशील कामगार					
	कुल		ग्रामीण		शहरी	
का नाम	2001	2011	2001	2011	2001	2011
मध्यप्रदेश	**74.1**	**71.9**	**70.7**	**67.7**	**88.4**	**87.1**
चम्बल	74.4	77.3	72.2	75.4	86.7	85.2
ग्वालियर	76.6	76.3	72.9	71.9	89.2	88.1
सागर	72.9	72.2	70.3	69.3	86.1	85.7
रीवा	71.2	65.2	69.0	62.3	86.1	83.1
शहडोल	**66.1**	**53.7**	**62.7**	**48.9**	**85.7**	**81.3**
उज्जैन	75.6	74.4	72.8	70.7	87.6	88.1
इंदौर	78.3	81.3	74.7	77.8	91.2	91.6
भोपाल	75.1	70.9	70.0	64.0	88.6	85.4
नर्मदापुरम	71.1	69.3	67.7	65.4	89.0	87.3
जबलपुर	71.4	65.2	68.1	60.5	88.0	84.8
राज्य एवं संभाग	**कुल कामगारों में से सीमांत कार्यशील कामगार**					
	कुल		ग्रामीण		शहरी	
का नाम	**2001**	**2011**	**2001**	**2011**	**2001**	**2011**
मध्यप्रदेश	**25.9**	**28.1**	**29.3**	**32.3**	**11.6**	**12.9**
चम्बल	25.6	22.7	27.8	24.6	13.3	14.8
ग्वालियर	23.4	23.7	27.1	28.1	10.8	11.9
सागर	27.1	27.8	29.7	30.7	13.9	14.3
रीवा	28.8	34.8	31.0	37.7	13.9	16.9
शहडोल	**33.9**	**46.3**	**37.3**	**51.1**	**14.3**	**18.7**
उज्जैन	24.4	25.6	27.2	29.3	12.4	11.9
इंदौर	21.7	18.7	25.3	22.2	8.8	8.4
भोपाल	24.9	29.1	30.0	36.0	11.4	14.6
नर्मदापुरम	28.9	30.7	32.3	34.6	11.0	12.7
जबलपुर	28.6	34.8	31.9	39.5	12.0	15.2

स्रोत :– Directorate of Census Operations, Madhya Pradesh, Ministry of Home Affairs, Government of India, Year 2011, P. 195.

उपर्युक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कुल कार्यशील श्रमिकों में से मुख्य कार्यशील कामगारों का प्रतिशत मध्यप्रदेश के सभी संभागों में से शहडोल संभाग का सबसे न्यूनतम दर्ज है। इसी प्रकार कुल सीमांत श्रमिकों के प्रतिशत का कुल श्रमिकों के प्रतिशत के संभागवार विश्लेषण से पता चलता है कि चंबल और इंदौर संभाग को छोड़कर सभी संभागों ने 2001–2011 के दशक के दौरान वृद्धि की प्रवृत्ति दर्ज की है। ग्रामीण सीमांत श्रमिकों ने ग्रामीण मुख्य श्रमिकों की तुलना में विपरीत प्रवृत्ति दर्ज की है। इसका आशय है कि केवल चंबल और इंदौर संभागों में नकारात्मक प्रवृत्ति है। शहरी सीमांत श्रमिकों के प्रतिशत में उज्जैन और इंदौर संभागों को छोड़कर सभी संभागों में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई। मुख्य श्रमिकों (कुल, ग्रामीण और शहरी) में दशक भर में सबसे अधिक गिरावट शहडोल संभाग में देखी गई है। कुल मुख्य श्रमिकों के मामले में यह 12 प्रतिशत से अधिक है।

तालिका – शहडोल संभाग की मुख्य कार्यशील जनसंख्या

विवरण	वर्ष 2001		वर्ष 2011	
	जनसंख्या	प्रतिशत	जनसंख्या	प्रतिशत
प्रतिशत के साथ श्रमिकों का विभाजन				
काश्तकार	899461	39.3	11,29,219	24.5
खेतिहर मजदूर		35.4		47.4
पारिवारिक उद्योग		2.7		2.7
अन्य		22.5		25.5

स्रोत :– Directorate of Census Operations, Madhya Pradesh, Ministry of Home Affairs, Government of India, Year 2011, P. 226.

दण्डारेख

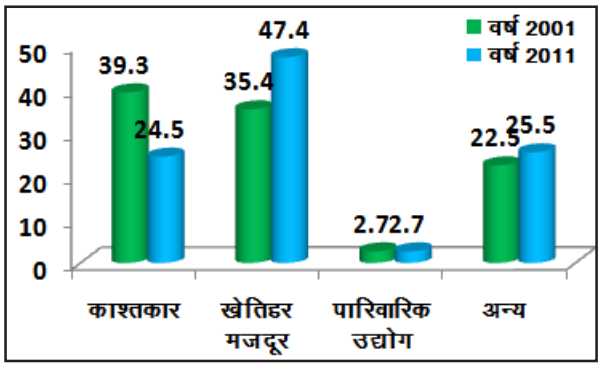

उपर्युक्त तालिका एवं ग्राफ के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शहडोल संभाग में मुख्य कार्यशील श्रमिकों में से काश्तकारों का प्रतिशत जहां वर्ष 2001 में 39.3 प्रतिशत था वह वर्ष 2011 में घटकर 24.5 प्रतिशत हो गया अर्थात् काश्तारों की संख्या इस दशक में कम हुई है, साथ ही खेतिहर मजदूरों की संख्या में इस दशक में वृद्धि दिखाई देती है। वर्ष 2001 में खेतिहर मजदूर जहां 35.4 प्रतिशत थे वह वर्ष 2011 में बढ़कर 47.4 प्रतिशत हो गये, अर्थात् कृषि के विकास में 12 प्रतिशत खेतिहहर मजदूरों ने अपना योगदान दिया है। इसी प्रकार पारिवारिक उद्योगों में संलग्न कामगारों की स्थिति को देखा जाये तो स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में कोई भी अंतर इस दशक में प्रतीत नहीं होता है। लेकिन अन्य कामगारों की स्थिति जहां वर्ष 2001 में 22.5 प्रतिशत थी वह वर्ष 2011 में बढ़कर 25.5 प्रतिशत हो गयी। अर्थात् वर्ष 2001 से वर्ष 2011 तक इस क्षेत्र में 3 प्रतिशत की वृद्धि परिलक्षित होती है।

शहडोल संभाग में कृषि का विकास परिदृश्य – बीसवीं शताब्दी में कृषि के विकास परिदृश्य को आंकलित करने के लिए वृहद आर्थिक विकास का ऐतिहासिक अध्ययन करना अनिवार्य होगा। वर्ष 1909 के पश्चात् मानसून भारतीय कृषि के लिए विशेष रूप से अनुकूल रहा है। फलत: भारतीय कृषि की समृद्धिशीलता में वृद्धि हुई। यह काल भारतीय कृषि के लिए एक अत्यंत ही अधिक महत्वपूर्ण काल है। इस काल में अनेक परिवर्तन हुए। साथ ही इस काल ने अनेक कृषि सुधारों एवं प्रयोगों का अनुभव किया। इस काल में कृषि क्षेत्र में हुए बदलाव को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है जैसे (1). कृषकों ने फसलों के व्यवसायिक पक्ष पर अधिक ध्यान देना प्रारम्भ किया। (2) वाणिज्यिक और खाद्यान्न फसलों को उगाने में कृषि भूमि का उचित वितरण किया गया। (3) परिवहन और संचार सुविधाओं में विकास

के कारण कृषि की वस्तुओं को विभिन्न बाजारों में और भी अधिक सुविधापूर्वक ले जाना सम्भव हुआ। इससे कृषि वस्तुओं का बाजार और भी विस्तृत हो गया। (4) भारत का विदेशी व्यापार और भी बढ़ गया जिसमें कृषि वस्तुओं का महत्वपूर्ण स्थान था। (5) इस काल में भारतीय जनसंख्या में भी पर्याप्त वृद्धि हुई थी। अब तक भारतीय कुटीर और लघु उद्योगों का विनाश हो चला था, किन्तु साथ ही वृहत् उद्योगों का विकास भी नहीं हो पाया था। इसलिए आजीविका के अन्य साधनों के अभाव में भारतीय कृषि पर जनसंख्या का बोझ बढ़ गया। (6) इससे अन्य आजीविका साधनों के अभाव के कारण खेतों का छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजन तीव्र गति से प्रारम्भ हो गया। (7) जनसंख्या का भार बढ़ जाने तथा कृषि के वाणिज्यिकरण के कारण कृषि भूमि का मूल्य बढ़ गया। (8) भारत प्रमुखत: कच्चे माल का निर्यातक हो गया। कुटीर और लघु उद्योगों के कारण उसकी खपत देश में अब उतनी नहीं हो सकी किन्तु विदेशों में उनकी मांग बढ़ गयी थी।

20वीं शताब्दी के सामाजार्थिक विकास के तहत कृषि क्षेत्र में पड़ने वाले सकारात्मक/नकारात्मक प्रभाव समग्र रूप से भारत के समस्त प्रांतों में देखने को मिलते हैं। अत: यह स्पष्ट तोर पर कहा जा सकता है कि प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से कृषि में आये इन बदलावों का प्रभाव शहडोल संभाग में भी रहा है।

शहडोल संभाग में कृषि एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है, जिसमें चावल, मक्का, दालें और तिलहन जैसी फसलों का रकबा अत्यधिक पाया गया हैं। संभाग मुख्यालय, शहडोल जिले में कृषि एक प्रमुख व्यवसाय है, हल्दी की खेती को एक जिला एक उत्पाद के तहत चुना गया है, जो किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बना रहा है। यद्यपि पूर्व अध्यायों में शोधार्थी द्वारा शहडोल संभाग के शहडोल, उमरिया, अनूपपुर जिलों में कृषि के विकास परिदृश्य को विश्लेषित किया जा चुका है, जिससे स्पष्ट होता है कि कृषि के क्षेत्र में वृहद स्तर पर परिवर्तन हुआ है। कृषि के आधुनिकीकरण, गुणवत्तायुक्त बीज एवं सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था से जहां एक कृषि के विकास को गति प्राप्त हुई है वहीं कृषकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है। कृषि कार्य हेतु सिंचाई के संसाधनों की उपलब्धता के संबंध में सर्वेक्षण के आधार पर निम्न बिंदु परिलक्षित होते हैं।

1. नहरों की संख्या के आधार पर जैतहरी विकासखण्ड का पहला स्थान है, किन्तु सिंचित क्षेत्र के आधार पर सबसे अधिक क्षेत्रफल ब्यौहारी विकासखण्ड का है। सबसे कम नहरें एवं सिंचित क्षेत्र के आधार पर कोतमा विकासखण्ड है।
2. नलकूपों की संख्या के आधार पर सर्वोच्च स्थान पर मानपुर विकासखण्ड है, किन्तु सिंचित क्षेत्र की दृष्टि से करकेली विकासखण्ड का पहला स्थान है। सबसे कम नलकूपों की संख्या अनूपपुर विकासखण्ड में है परन्तु सिंचित क्षेत्रफल में सबसे पीछे पुष्पराजगढ़ विकासखण्ड है।
3. कुओं की संख्या एवं सिंचित क्षेत्रफल के आधार पर पहले स्थान पर करकेली विकासखण्ड है, जबकि संख्या के आधार पर सबसे पीछे कोतमा विकासखण्ड एवं कुओं से सिंचित क्षेत्र पर गोहपारू विकासखण्ड का स्थान सबसे निचले क्रम में है।
4. तालाबों की संख्या एवं सिंचित क्षेत्र के आधार पर पहले स्थान पर ब्यौहारी विकासखण्ड है, तथा सबसे कम तालाबों की संख्या में पाली विकासखण्ड व पुष्पराजगढ़ विकासखण्ड में सबसे कम सिंचित क्षेत्र है।

शहडोल संभाग में कृषि के आधुनिकीकरण एवं गुणवत्तापूर्ण बीजों की उपलब्धता के चलते कृषि के विकास को उत्तरोत्तर गति प्राप्त हो रही है, किन्तु इस संभाग में आदिवासियों की बाहुल्यता के कारण आज भी इस वर्ग के कृषकों द्वारा पुरानी पद्धति से ही कृषि कार्य किया जा रहा है, आधुनिकीकरण का प्रभाव एवं जागरूकता का अभाव आज भी वर्ग के लिए एक चिंता का विषय है। यद्यपि राज्य शासन इस वर्ग के लोगों को पर्याप्त सुविधायें व संसाधन मुहैया कराने पर प्रतिबद्ध है किन्तु इस वर्ग के लोगों तक इन सुविधाओं का न पहुंच पाना यक्ष प्रश्न बना हुआ है।

शहडोल संभाग में शिक्षा का विकास – सामाजिक एवं आर्थिक विकास की कल्पना, शिक्षा के बिना की जाना संभव नहीं है। शिक्षा ही एक ऐसा सशक्त साधन है जिसके माध्यम से न केवल समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर किया जा सकता है बल्कि एक अच्छे एवं सुदृढ़ समाज की स्थापना भी की जा सकती है। शिक्षण संस्थाएं ही व्यक्तियों को सामाजिक-आर्थिक विकास का आधार प्रदान करती हैं। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी क्षेत्र की सामाजिक- आर्थिक स्थिति एवं पिछड़ेपन को बदला जा सकता है।

तालिका – शहडोल संभाग में शिक्षण संस्थाओं की स्थिति का मूल्यांकन

क्रं.	वर्ष	प्राथमिक शालाओं की संख्या	माध्यमिक शालाओं की संख्या	उच्चतर माध्यमिक शालाओं की संख्या	महाविद्यालयों की संख्या
1.	1971	1263	134	26	3
2.	1981	1392	177	37	4
3.	1991	1378	267	62	6
4.	2001	1451	335	90	9
5.	2011	1495	629	129	13
6.	2021	1693	756	248	23

स्रोत :- जिला सांख्यिकी पुस्तिका, शहडोल,उमरिया, अनूपपुर।

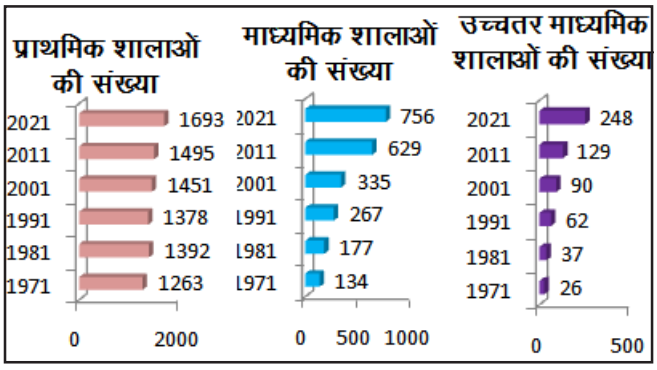

शहडोल संभाग में सांस्कृतिक धरोहर – मध्यप्रदेश भारत का हृदय प्रदेश है और शहडोल संभाग (अध्ययन क्षेत्र का संभाग) इस हृदय प्रदेश पर सुशोभित एक मणि के समान है। विविधता में एकता को समेटे विशाल भारत वर्ष के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी एक पृथक पहचान एवं विशेषता है। प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा, वेशभूषा, जीवनशैली, खान-पान, रीतिरिवाज एवं सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्थितियाँ इत्यादि के कारण वैसे ही है, जैसे किसी माला में भिन्न-भिन्न प्रकार के रत्नों को पिरोया गया है। इनमें से एक रत्न हमारा शहडोल संभाग है, जो अपनी कई

विभिन्नताओं के कारण म.प्र. ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत में एक विशिष्ट स्थान रखता है। शहडोल संभाग की सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत रखने में आदिवासियों का प्रमुख स्थान है। अध्ययन की दृष्टि से यहां आदिवासियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य का विश्लेषण करना उचित होगा क्योंकि अनुसूचित जनजाति के लोगों ने ही यहां की सांस्कृतिक विरासत को जींवत रखा है। यदि शहडोल संभाग की सांस्कृतिक विरासत को स्पष्ट करना है तो यहां के आदिवासियों की संस्कृति का अध्ययन करना अनिवार्य है।

शहडोल संभाग में आदिवासियों की जातिय बाहुल्यता के पदानुक्रम के आधार पर (01) गोंड़ (02) परधान (03) भरिया (04) सहरिया (05) भील (06) हल्वा (07) बैगा (08) बहेलिया (पारधी) आदि हैं। इनमें गोंड़ जाति की बाहुल्यता है। जातियों की सामाजिक स्थिति के निर्धारक तथ्य पृथक-पृथक हैं। प्रत्येक जाति के अपने-अपने सामाजिक स्थिति निर्धारक तत्व हैं जो उनकी जाति विशेष के संदर्भ में ही मान्य हैं और उनके आधार पर उस जाति विशेष में सामाजिक स्तर की मान्यता मिलती है, जिसका समर्थन परिवेश में निवासरत् अन्य जातियाँ भी करती हैं। सामाजिक स्थिति का निर्धारण अनेक मापदण्डों के आधार पर किया जाता है, जिनका निर्धारण सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थिति के आधार पर किया जाता है, अंतिम दो मापदण्ड, स्थिति एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते हैं। आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर व्यक्ति विशेष का सामाजिक स्तर उच्च हो जाता है, आर्थिक स्थिति अच्छी न होने की स्थिति में सामाजिक स्तर निम्न ही रहता है। उसी प्रकार राजनैतिक पद के कारण भी संबंधित का सामाजिक स्तर प्रभावित होता है, उच्च राजनैतिक पद पाने पर उसका सामाजिक स्तर उच्च रहता है।

वेशभूषा से सभ्यता तथा बोलने या संभाषण से संस्कृति का आभास होता है। आदिवासी स्वभाव से श्रृंगार प्रिय जाति है। उसे वस्त्र और आभूषण पहनने का अत्यंत शौक होता है। पहनावा एवं वेशभूषा के मामले में पीढ़ी का अंतर अध्ययन क्षेत्र में स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है। वर्ष 2000 के पूर्व लोग (पुरूष) सफेद फर्द (धोती) पहनते थे। इसे परम्परागत तरीके से कमर में बांधकर पहना जाता था। कमर के ऊपर एक फतोही नामक परिधान का उपयोग करते थे। सिर पर पगड़ी की भाँति गमछा बांधा जाता था, जो सफेद या ज्यादातर लाल रंग का होता था। वहीं स्त्रियाँ मूंगई सूती साड़ी पहनती थी, जो कमर के सहारे परम्परागत तरीके से पहनी जाती थीं, कमर के ऊपर पोलका पहना जाता था। लेकिन अब पुरूष वर्गों द्वारा पेन्ट शर्ट पहनने का रिवाज है, वहीं स्त्रियाँ पेटीकोट तथा साड़ी, ब्लाऊज का उपयोग करती हैं। बच्चों के कपड़ों में समयानुकूल बदलाव देखा जा सकता है। ये परिवर्तन षिक्षा के प्रभाव तथा आय के कारण हुये हैं। अत: यह स्पष्ट है कि आदिवासियों के रहन-सहन में उनकी आर्थिक स्थिति अनुरूप आधुनिक पहनावे का महत्व बढ़ता जा रहा है।

निष्कर्ष - निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि शहडोल संभाग आदिवासी संभाग होने के बावजूद भी शिक्षा, यातायात, संचार-व्यवस्था, मनोरंजन के साथ साक्षरता की स्थिति में भी उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है। यहां पर बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान होने के कारण देश के साथ-साथ विदेशों से भी पर्यटक यहां की मनोरम प्राकृतिक वातावरण को देखने के आकर्षित हो रहे हैं। वाणसागर बहुउद्देशीय बांध परियोजना से संभाग के साथ-साथ प्रदेश ही नहीं, अपितु दूसरे प्रदेशों में भी सिंचाई के लिए पानी नहरों के माध्यम से भेजा जाता है, इसके साथ ही विद्युत उत्पादन भी बढ़ाया जा रहा है। लघु एवं कुटीर उद्योगों के साथ-साथ पशुपालन, मछलीपालन आदि से भी विभिन्न लोगों को रोजगार के पर्याप्त साधन उपलब्ध हो रहे हैं।

खनिज संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता होने से संभाग उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है। कोयले की खदानों से भरपूर मात्रा में कोयला उत्खनन हो रहा है, जो मध्यप्रदेश के अन्य राज्यों में ही नहीं अपितु देश के कोने-कोने में निर्यात किया जाता है। जिससे संभाग आर्थिक रूप से सुदृढ़ स्थिति में है। बाक्साइट, टाईल्स पत्थरों के कारखानों ने जहां श्रमिकों को रोजगार मुहैया कराया है वहीं इन खनिजों के निर्यात से सरकार के राजस्व में वृद्धि हुई है। जिससे संभाग की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है।

संभाग में कृषि के विकास को देखा जाये तो इस क्षेत्र में भी कृषकों द्वारा रबी एवं खरीफ की फसलों का बढ़-चढ़कर उत्पादन कर लाभ प्राप्त कर रहे हैं। यद्यपि संभाग में आदिवासी जनजातियों की बाहुल्यता है, जिनमें से अधिकांश कृषक आज भी कृषि को परम्परागत तरीके से कर रहे हैं जिससे उन्हें अन्य कृषकों की तुलना में लाभ कम प्राप्त हो रहा है। इस दिशा में इस वर्ग के कृषकों को जागरूक करने की महती आवश्यकता है। सिंचाई के संसाधन को देखा जाये तो संभाग में नदियां, नहरें, कुएं, तालाब, ट्यूब्बेल आदि की उपलब्धता पर्याप्त मात्रा में है। अत: यह कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र शहडोल संभाग प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति पथ पर अग्रसर है। राज्य शासन की नीतियों का लाभ क्षेत्र के हर वर्ग को पात्रतानुसार समग्र रूप से प्राप्त हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. श्रीवास्तव, पी.एन : जिला गजेटियर शहडोल, म.प्र. जिला गजेटियर, वर्ष 1980।
2. पाण्डेय, प्रो. श्रीधर, आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 2010
3. सिंह, रामगोपाल (2000) समाज शास्त्र, समाज शास्त्रीय अवधारणा एवं भारतीय समाज, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
4. मिश्र, उमाशंकर (2002), सामाजिक, सांस्कृतिक मानव शास्त्र, पलक प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. ओक्टे, मारूतिराव : छिन्दवाड़ा क्षितिज, वर्ष 1995
6. तिवारी, डॉ. शिवकुमार एवं डॉ. श्रीकमल शर्मा, म.प्र. की जनजातियाँ समाज एवं व्यवस्था, वर्ष 2007
7. वन्या संदर्भ, 10 मार्च, 2006
8. जिला जनगणना पुस्तिका, वर्ष 2001, पृ. xxii एवं जिला जनगणना पुस्तिका, भाग-ब, वर्ष 2011
9. कुमार, डॉ. प्रमिला : मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2003
10. https://censusindia.gov.in/census.website/node/481

****